

पूर्णमा व्रत कथा PDF

एक बार द्वापर युग में यशोदा जी ने कृष्ण से कहा- हे कृष्ण! आप सारे जगत् की पालनहार, पालनहार और संहारक हैं, आज मुझे ऐसा व्रत बताएं, जिसके पालन से स्त्रियों को मृत्यु लोक में विधवा होने का भय नहीं रहता ऐसा माना जाता है कि यह व्रत सभी की मनोकामनाएं पूरी करता है श्री कृष्ण कहते हैं हे माते ! बहुत सुंदर प्रश्न किया है आपने। मैं आपको उसी व्रत को विस्तार से बताता हूं।

सौभाग्य प्राप्ति के लिए स्त्रियों को पूरे बत्तीस मास का व्रत करना चाहिए। इस व्रत को रखने से महिलाओं को सौभाग्य और धन की प्राप्ति होती है। यह व्रत अक्षय सौभाग्य प्रदान करता है और भगवान शिव के प्रति मनुष्य की भक्ति को बढ़ाता है। यशोदा जी कहने लगी- हे कृष्ण! मृत्युलोक में सर्वप्रथम किसने यह व्रत किया था, इस विषय में मुझे विस्तारपूर्वक बताओ।

श्री कृष्ण जी कहने लगे कि इस पृथ्वी पर नाना प्रकार के रत्नों से परिपूर्ण 'कटिका' नाम का एक नगर था, जिसका पालन-पोषण एक बड़े प्रसिद्ध राजा चन्द्रहास ने किया था। धनेश्वर नाम का एक ब्राह्मण था और उसकी पत्नी बहुत रूपवती थी। दोनों उस नगर में बड़े प्रेम से रहते थे। घर में धन-धान्य आदि की कभी कमी नहीं रहती थी। उसे बड़ा दुख था कि उसकी कोई संतान नहीं थी, वह इस दुख से बहुत दुखी रहता था। एक बार उस नगर में एक महान तपस्वी योगी आए।

उस ब्राह्मण के घर को छोड़कर अन्य सभी घरों से भिक्षा लाकर वह योगी भोजन करता था। उसने रूपवती से भिक्षा नहीं ली। एक दिन वह योगी रूपवती से भिक्षा लेने के स्थान पर गंगा तट पर जाकर प्रेमपूर्वक भिक्षा ग्रहण कर रहा था कि धनेश्वर ने किसी तरह योगी के इस सारे कार्य को देख लिया।

जब भिक्षा का अनादर किया गया तो अनादर से दुखी होकर धनेश्वर योगी जी से कहते हैं कि महात्मन! तुम सब घरों से भीख लेते हो पर मेरे घर से कभी भीख नहीं लेते, इसका क्या कारण है? योगी ने कहा कि निःसंतान गृहस्थ की भिक्षा अपवित्र के भोजन के समान होती है और जो अशुद्ध का भोजन करता है वह भी अशुद्ध हो जाता है। चूंकि आप निःसंतान हैं, इसलिए मैं पददलित होने के भय से आपके घर में भीख नहीं लेता। यह सुनकर धनेश्वर मन में बहुत दुखी हुए और हाथ जोड़कर योगी के चरणों में गिर पड़े और भाव-विभोर होकर कहने लगे- हे महाराज! यदि ऐसा है तो आप मुझे पुत्र प्राप्ति का उपाय बताएं। आप सर्वज्ञ हैं, मुझे ऐसा आशीर्वाद दें। मेरे घर में धन की कोई कमी नहीं है, परन्तु पुत्र न होने के कारण मैं बहुत दुःखी हूं।

तुम मेरे इस दुःख को हर लो, तुम समर्थ हो। यह सुनकर योगी कहने लगे- हे ब्राह्मण! तुम चंडी की पूजा करो। घर आकर उसने अपनी पत्नी को सारा वृत्तांत सुनाया और स्वयं तपस्या के लिए वन में चला गया। वन में जाकर उन्होंने चंडी की पूजा की और व्रत किया। सोलहवें दिन चंडी ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देकर कहा- हे धनेश्वर! आपको एक पुत्र होगा, लेकिन वह सोलह वर्ष की आयु में मर जाएगा। यदि तुम स्त्री-

पुरुष दोनों पूरे बत्तीस मास का व्रत करो तो तुम्हारी आयु लंबी होगी। जितना हो सके आटे का दीपक बनाकर भगवान शिव की पूजा करें, लेकिन पूर्णिमा के दिन बत्तीस दीपक जलाना चाहिए।

प्रातः काल इस स्थान के पास आपको एक आम का पेड़ दिखाई देगा, उस पर चढ़ जाइए, एक फल तोड़ लीजिए और जल्दी ही अपने घर जा कर अपनी पत्नी को सारी बात कह सुनाइए। ऋतुस्नान के बाद स्वच्छ होकर श्री शंकर जी का ध्यान करते हुए वह फल खाएगी। तब भगवान शंकर की कृपा से वह गर्भवती होगी। प्रातः काल जब वह ब्राह्मण उठा तो उसने उस स्थान के पास एक आम का पेड़ देखा जिसमें एक बहुत ही सुंदर आम का फल लगा हुआ था।

उस ब्राह्मण ने उस आम के पेड़ पर चढ़कर उस फल को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन कई बार कोशिश करने के बाद भी वह पेड़ पर नहीं चढ़ पाया। तब वह ब्राह्मण बहुत चिंतित हुआ और विघ्नहर्ता भगवान गणेश की पूजा करने लगा— हे दयानिधे! जो अपने भक्तों के विघ्नों का नाश करके उनके शुभ कार्यों को करता है, जो दुष्टों का नाश करता है, सिद्धि का दाता, आप मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं अपना मनोरथ पूर्ण कर सकूँ। इस प्रकार गणेश जी की प्रार्थना करके उनकी कृपा से धनेश्वर वृक्ष पर चढ़े और उन्होंने एक बहुत ही सुंदर आम का फल देखा।

उसने सोचा कि यह वही फल है जो उसे वरदान से मिला था और कोई फल दिखाई नहीं दे रहा था, धनेश्वर ब्राह्मण फल तोड़कर अपनी पत्नी के पास ले आए और उसकी पत्नी ने कथा के अनुसार उस फल को खा लिया और उस फल को खाने से वह गर्भवती हो गई मां देवी की कृपा से उनके एक अत्यंत रूपवान पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम उन्होंने देवीदास रखा। माता-पिता के हर्ष-शोक से वह बालक शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान पिता के घर में बढ़ने लगा। भवानी की कृपा से वह बालक अत्यन्त रूपवान, सुशील और विद्या अध्ययन में अत्यन्त निपुण हो गया। दुर्गा जी की आज्ञानुसार उसकी माता ने पूरे बत्तीस मास का व्रत करना प्रारम्भ कर दिया था, जिससे उसका पुत्र बूढ़ा हो जाए।

सोलहवां वर्ष शुरू होते ही देवीदास के माता-पिता को इस बात की बड़ी चिंता होने लगी कि कहीं उनके पुत्र की मृत्यु इसी वर्ष न हो जाए। तो उसने मन ही मन सोचा कि यदि यह हादसा उसके सामने हुआ तो वह इसे कैसे सह पाएगा? अस्तु तब उन्होंने देवदास के मामा को बुलाया और अपनी इच्छा प्रस्तुत करते हुए कहा कि देवीदास 1 वर्ष के लिए काशी जाकर अध्ययन करें और उस समय के दौरान उसे अकेला ना छोड़ा जाए। तो तुम साथ में जाओ और एक साल बाद वापस ले आओ।

माता-पिता ने सारी व्यवस्था करके देवीदास को घोड़े पर बिठाकर काशी चलने को कहा और मामा को भी साथ चलने को कहा, पर यह बात मामा या किसी और को नहीं बताई। धनेश्वर और उनकी पत्नी ने देवी दुर्गा की पूजा शुरू कर दी और अपने बेटे की शुभकामनाएं और लंबी उम्र के लिए पूरे महीने उपवास किया। इस प्रकार पूरे बत्तीस मास का व्रत पूरा हुआ।

कुछ समय बाद एक दिन मामा-भांजा दोनों रास्ते में रात बिताने के लिए एक गांव में ठहरे हुए थे, उस दिन एक ब्राह्मण की अत्यंत सुंदर, सुशीला, विदुषी और गुणवती कन्या का विवाह होने वाला था। उस गाँव में जगह। देवीदास और उसके मामा भी उसी धर्मशाला में ठहरे हुए थे, जहां दूल्हा और उसकी बारात ठहरे

हुए थे। संयोगवश कन्या को तेल आदि चढ़ाकर मंडप आदि की क्रिया की गई तो विवाह के समय वर धनुर्धर हो गया।

अस्तु, वर के पिता ने अपने संबंधियों से विचार-विमर्श करके यह निश्चय किया कि यह देवीदास मेरे पुत्र के समान रूपवान है, मुझे इसके साथ विवाह कर लेना चाहिए और बाद में विवाह के अन्य कार्य मेरे पुत्र के साथ किए जाएंगे। ऐसा विचार कर वह देवीदास के मामा के पास गया और कहा कि तुम अपने भतीजे को कुछ समय के लिए हमें दे दो, ताकि विवाह की सभी रस्में सुचारू रूप से संपन्न हो सकें। तब उसके मामा कहने लगे कि कन्यादान के समय दूल्हे को जो भी मधुपर्क आदि मिले वह हमें दे दिया जाए तो मेरा भतीजा इस बारात का दूल्हा बनेगा।

जब दूल्हे के पिता ने यह बात मान ली तो उन्होंने अपने भतीजे को दूल्हा बनने के लिए भेज दिया और रात में ही उसके साथ विवाह की सारी रस्में संपन्न हो गईं। वह अपनी पत्नी के साथ भोजन नहीं कर सका और मन ही मन सोचने लगा कि क्या यह कोई स्त्री होगी। इसी विचार में एकांत में वह गर्म श्वास छोड़ने लगा और उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। फिर दुल्हन ने पूछा क्या बात है? तुम इतने दुखी और दुखी क्यों हो रहे हो? तब उसने उसे सब कुछ बताया जो दूल्हे के पिता और उसके मामा के बीच हुआ था।

तब कन्या कहने लगी कि यह ब्रह्म विवाह के विरुद्ध कैसे हो सकता है। मैंने तुम्हें देव, ब्राह्मण और अग्नि के सामने अपना पति बनाया है, इसलिए तुम मेरे पति हो। मैं तुम्हारी पत्नी बनूंगी, कभी किसी और की नहीं। तब देवीदास ने कहा - ऐसा मत करो क्योंकि मैं बहुत छोटा हूँ, मेरे बाद तुम्हारी क्या गति होगी, इन बातों पर अच्छी तरह विचार करो। पर वह मन ही मन दृढ़ थी, बोली कि तेरी जैसी गति होगी, वही मेरी गति होगी। हे भगवान! तुम उठो और खाओ, तुम्हें भूख लगी होगी। इसके बाद देवीदास और उनकी पत्नी दोनों ने भोजन किया और वे रात्रि विश्राम के लिए सो गए। प्रातःकाल देवीदास ने पत्नी को तीन रत्न जड़ित अँगूठी, एक रूमाल देकर कहा- हे प्रिये! इसे लो और इसे एक संकेत के रूप में लो और स्थिर रहो।

मेरी मृत्यु और जीवन को जानने के लिए फूलों का बगीचा बनाओ। उसमें एक सुगन्धित नया फूल लगाओ, उसे रोज पानी से सींचो और खेलो और आनंद से मनाओ, मेरी मृत्यु के समय और जिस दिन ये फूल सूख जाएंगे और जब ये फिर से हरे हो जाएंगे, तो जान लेना कि मैं जीवित हूँ, इस बात को समझो दृढ़ संकल्प के साथ, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह समझाकर वह चला गया। सुबह होते ही वहाँ संगीत बजने लगा और जब दूल्हा और सभी बाराती शादी की रस्म खत्म करने के लिए मंडप में आए तो दूल्हे को अच्छी तरह देखकर लड़की ने अपने पिता से कहा कि यह मेरी नहीं है। पति। मेरे पति वही हैं जिनके साथ मुझे रात्रि में ग्रहण लगा था। मेरी इससे शादी नहीं हुई है। यदि वही है तो कहना कि मैंने उसे क्या दिया, मधुपर्क और कन्यादान के समय मैंने जो भूषणादि दी थी, उसे दिखाओ और रात्रि में मैंने उसे कौन-सी गुप्त बातें कहीं थीं। पिता ने अपने कथन के अनुसार दूल्हे को बुलाया। लड़की की ये सारी बातें सुनकर वह कहने लगा कि मैं कुछ नहीं जानता। इसके बाद वे लज्जित होकर चले गए और सारी बारात भी वहाँ से अपमानित होकर लौट गई।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- हे माता! इस प्रकार देवीदास अध्ययन के लिए काशी चले गए। कुछ समय बीतने पर रात को काल से प्रेरित एक सर्प उसे उसने के लिए वहाँ आ पहुँचा। उस जहर के प्रभाव से उसका सोने का स्थान विष की ज्वाला से चारों ओर से विषैला हो गया। लेकिन राज व्रत के प्रभाव से वह उसे काट नहीं

सका क्योंकि उसकी माता ने पहले ही बत्तीस पूर्णिमा का व्रत कर लिया था। इसके बाद दोपहर में स्वयं काल वहां आया और अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकालने का प्रयास किया, जिससे वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

भगवान की कृपा से श्री शंकर जी पार्वती जी सहित वहाँ पधारे। उन्हें मूर्छित अवस्था में देखकर पार्वती जी ने भगवान शंकर से प्रार्थना की कि हे महाराज! इस बालक की मां ने सबसे पहले 32 पूर्णिमा का व्रत किया हे देर जिसके प्रभाव से! आप उसे अपना जीवन देते हैं। भवानी के कहने पर भक्त-वत्सल भगवान श्री शिव जी ने उन्हें अपना जीवनदान दे दिया। इस व्रत के प्रभाव से काल को भी पीछे हटना ही पड़ा और इसकी वजह से देवीदास स्वस्थ होकर बैठ गया।

दूसरी ओर उसकी पत्नी अपने समय की प्रतीक्षा करती थी, जब उसने देखा कि उस फूलों के बगीचे में पत्ते और फूल नहीं हैं, तो वह बहुत हैरान हुई और जब वह ऐसे ही हरी हो गई, तो उसे पता चला कि वह जीवित है। यह देखकर वह बड़े प्रसन्न मन से पिता से कहने लगी कि पिताजी! मेरे पति जीवित हैं, तुम उन्हें खोजो। जब सोलहवां वर्ष बीत गया तो देवीदास भी अपने मामा के साथ काशी छोड़कर चले गए। इधर उसका ससुर उसे ढूँढ़ने के लिए घर से निकलने ही वाला था कि उसके मामा और भतीजा दोनों वहां आ गए, उसे आता देख उसके ससुर बड़े मजे से उसे अपने घर ले आए।

उस समय नगर के निवासी भी वहाँ एकत्रित हो गए और सबने निश्चय किया कि इस लड़की का विवाह अवश्य ही इस लड़के के साथ हुआ है। लड़की ने जब उस लड़के को देखा तो उसे पहचान लिया और कहा कि यह वही है जो इशारा करके गया था। उसके बाद सब कहने लगे कि अच्छा हुआ जो आ गया और सारे नगरवासी आनन्दित हो उठे। कुछ दिनों के बाद देवीदास अपनी पत्नी और मामा के साथ अपने ससुर के घर से ढेर सारे उपहार लेकर अपने घर चला गया। जब वह अपने गाँव के पास आया तो बहुत से लोगों ने उसे देख लिया और उसके माता-पिता को पहले ही बता दिया कि आपका पुत्र देवीदास अपनी पत्नी और मामा के साथ आ रहा है।

ऐसी खबर सुनकर पहले तो उन्हें यकीन नहीं हुआ, लेकिन जब दूसरे लोगों ने भी आकर उनका साथ दिया तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उन्होंने सास-ससुर के चरण छुए तो माता-पिता ने अपने बेटे और बहू को हृदय से लगा लिया और दोनों की आंखों से प्रेम के आंसू बह निकले। पुत्र-वधू के आगमन की खुशी में धनेश्वर ने बड़ा उत्सव मनाया और ब्राह्मणों को ढेर सारा दान देकर प्रसन्न किया।

श्री कृष्ण जी कहने लगे कि इस प्रकार बत्तीस पूर्णिमा के व्रत के प्रभाव से धनेश्वर पुत्र हुआ। जो स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं, उन्हें जन्म-जन्मान्तर विधवा होने का कष्ट नहीं होता और वे सदा सौभाग्यशाली रहती हैं, यह मेरा वचन है, किसी प्रकार का संदेह न करें। यह व्रत पुत्र-पौत्र देने वाला और सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। ऐसा माना जाता है कि 32 पूर्णिमा का व्रत करने से मनचाही वस्तु की प्राप्ति होती है और भगवान शिव की पूर्ण कृपा बनी रहती है।

pdfinbox.com